

— अन्वय 1) *hinabführen* (in's Wasser): अन्वयम् AIT. Br. 7, 17. CAT. Br. 5, 1, 4, 5. — 2) *eingiessen*: (सोमम्) द्रोणकलशमन्वयनिनाय AIT. Br. 7, 17.

— व्यय *einzelne eingiessen*: (सोमग्रहन्) चमसेषु व्यवनीय CAT. Br. 5, 1, 3, 19.

— समव 1) *zusammenführen, vereinigen*: प्राणा अत्रैव समवनीयते CAT. Br. 14, 7, 2, 8, 6, 2, 12. — 2) *zusammengiessen* AIT. Br. 2, 20. संल-  
वाहोत्तमसे समवनीयति 30. CAT. Br. 5, 3, 4, 27. 3, 9, 2, 30. ÂCV. GRHJ. 4, 7.

— आ 1) *herbeigeleiten, — führen, — bringen, — tragen, — holen*:  
हृत्तद्वन्द्वमनयत्वा सुतेन I. V. 7, 33, 2. 10, 109, 2. अग्रिम् 1, 31, 4. उदकम्  
AIT. Br. 8, 24. प्रज्ञायै वा नयामसि AV. 5, 25, 8. 2, 26, 2. 36, 8. RV. 6, 13,  
17. 7, 18, 7. 8, 33, 16. CAT. Br. 2, 1, 4, 16. 12, 8, 1, 8. TBr. 1, 5, 6, 7. ता-यो  
गामानयत् AIT. Up. 2, 2. तं गच्छानय MBh. 3, 271. 2281. 2656. fg. 5, 7530.  
R. 1, 8, 4. 9, 56. R. GORR. 4, 11, 8. 3, 49, 23. Çik. 110, 15. Vid. 95. 97. 198.  
RĀGA-TAR. 5, 56. HIT. 40, 11. 42, 2. 7. DHŪRTAS. 92, 5. तेषामुदकमानीय M.  
3, 210. ततो ऽग्निमानयित्वेह SAV. 5, 78. DAÇ. 2, 6. R. 1, 2, 9. 2, 32, 25. 53,  
30. उदकं काश्चनैर्घटैः — आनिन्युः 65, 8. Çik. 86, 18. Vid. 72. PAÑĀT. 36,  
1. 40, 15. 76, 17. 96, 16. VET. in LA. 18, 5. 34, 1. KULL. zu M. 11, 70. आ-  
नयित (आनायित?) KATHĀS. 4, 73. पौत्रश्च ते त्रिपद्यगो त्रिदिवादानयिष्यति  
MBh. 3, 990 G. R. 3, 55, 52. AK. 2, 7, 20. आनीताय स्ववेष्मनि Vid. 193. ने-  
त्रानीताः — विमानाग्रभूमिः MEGH. 70. HIT. 20, 12. Bhāg. P. 4, 1, 5. एना-  
मानयेह ममात्तिकम् MBh. 3, 2550. 1, 5937. केनाप्युत्तिपतेव पश्य भुवनं  
मत्पार्श्वमानीयते Çik. 167. मत्सकाशम् PAÑĀT. 68, 19. 20. PRAB. 99, 1. मम  
समीपम् VET. in LA. 23, 19. अङ्गम् *auf den Arm nehmen* MBh. 3, 2946.  
मुखम् *zum Munde führen* 4, 639. वार्त्तेयमानयामास (= caus.) पुरुषैरात-  
कारिभिः MBh. 3, 2282. वेश्याभिर्मुनित्रुपाभिरानेष्यत ऋषेः सुतम् R. 1, 8,  
23. 2, 32, 38 (आनयामास ohne instr. aber in caus. Bed.). तेन वराङ्गना-  
भिरनायि विद्वान् BHATṬ. 1, 10. med. MBh. 1, 5937. 2, 1985. 3, 267. 5, 7441.  
14, 61. R. 1, 8, 19. 59, 7. 61, 8. 70, 11. RĀGA-TAR. 5, 347. Bhāg. P. 4, 1, 5.  
Mit पुनरु *zurückführen, zurückbringen*: तमुपादाय गच्छेयम् — पुनश्चैवा  
नयिष्यामि MBh. 1, 6051. RĀGA-TAR. 5, 258. auch ohne पुनरु in dieser  
Bed. MBh. 3, 2811. R. 1, 40, 9. 2, 82, 29. 3, 55, 52. आनयिष्यामि VET. in  
LA. 37, 10. — आनीये DAÇAK. 85, 11 (BENF. Chr. 195, 11) fehlerhaft für अ-  
नीये. — 2) *eingiessen, einmengen*: हरिरानीतः पुरुषैरा अन्वु RV. 9,  
96, 24. VS. 39, 5. लुच्यप आनीय CAT. Br. 11, 5, 3, 4. 1, 7, 4, 16. 18. KĪTJ.  
Ça. 3, 2, 22. (लीरम्) अधिश्चित्योत्तरमानयति TBr. 2, 1, 5, 5. ÂCV. GRHJ. 1,  
24. — 3) (Opfer) *bringen* (vgl. कुरु mit आ): यः पुरुषमेधानामायुतमानयते-  
नास्यायुतनायिवम् MBh. 1, 3773. — 4) *Jmd Etwas zuführen* so v. a.  
*zuthellen, übertragen auf*: आनिनाय भुवः कम्पं जहाराश्रमवासिनाम्  
RAGH. 15, 24. — 5) *bringen zu Etwas, versetzen in* (vgl. simpl.): ताना-  
नयेदृशं सर्वान्सामादिभिरुपायैः zum Gehorsam bringen, sich unterwerfen  
M. 7, 107. 108. 9, 261. कृत्वा चास्य चमू कृत्वा वशमेवानयामहे MBh. 4,  
982. विधंसमानीताः zerstört MĀRK. P. 14, 65. नकारलोपोष्मरभावमानये-  
दपेतरागो प्रकृतिं परिगृहे RV. Prāt. 11, 19. 20. — 6) *ableiten, berech-  
nen nach Śūriab.* 12, 65. — 7) *anbringen, anwenden, an den Tag legen,  
zeigen*: भवर्से वैराग्यमानीयताम् so v. a. आधीयताम् (wie auch die v. 1.  
hat; vgl. Spr. नन्वात्मात्मन्यवधीयताम् u. s. w.) BHART. bei SCHIEFNER  
und WEBER S. 26, Z. 3. — Vgl. आनय fgg., नय, नय्य, नीति, ने-

तर् fg. — caus. *herbeiführen, — kommen, — bringen lassen*: तया वा-  
नाययिष्यामि निवासं स्वम् MBh. 1, 2974. 5045. 3, 1870. 2276. 2689. 3017.  
R. 1, 4, 25. 8, 16. 9, 4. 2, 74, 27. RAGH. 12, 12. KATHĀS. 12, 3. 18, 123. 197.  
200. SOM. NAL. 92. तामानाय्येह मञ्जूषाम् UPAR. 73 (तामनय्येह KATHĀS. 4,  
75). med. R. GORR. 2, 82, 10. आनाययितुम् fehlerhaft für आनाययितुम् R.  
SCHL. 2, 14, 21.

— अन्वा *zuführen*: रयमन्वानयतस्मै MBh. 7, 6343.

— अ-या *eingiessen, einmengen*: दधि मधु सर्पिरातपवर्ष्या आपो  
ऽभ्यानीय AIT. Br. 8, 17.

— सम-या *herbeiführen, herführen*: वन्दि समाभ्यानय (sic!) मत्सका-  
शम् MBh. 3, 10656.

— अवा, अवानीता Çik. Ch. 125, 5 wohl fehlerhaft für अपनीता; die  
andere Recension (83, 9) hat st. dessen कृता.

— उदा 1) *herauf, — herausführen* (aus dem Wasser): क्षपितानद्यान्  
CAT. Br. 5, 1, 4, 5. पत्नीम् 4, 4, 2, 17. 2, 5, 2, 20. 13, 2, 3. तानुमेतोदानयेत्  
(अवमृयात्) LĪTJ. 4, 4, 13. — 2) med. *in die Höhe bringen, erhöhen* (bildl.):  
उदानये ऽथ वा यशः BHATṬ. 8, 21.

— अन्वुदा = उदा 1. GOBB. 2, 1, 19.

— समुदा, नयति P. 8, 1, 70, Sch.

— उपा 1) *herbeiführen, herbeibringen, herbeibringen* Çik. 110, 15, v. 1.  
उपानीतस्तार्क्ष्येण Bhāg. P. 4, 7, 19. निमानैर्विधेयैश्चैत्रैरुपानीतैः सुरात-  
नैः MBh. 4, 1777. पणयानि MBh. 2, 230. पयोधत्तम् HARIV. 4417. R. 1, 19,  
22. 2, 65, 9. स्रतो (acc. pl.) ध्रुवं कृत्तमुपानयति (ऋतवः) HARIV. 8797. मम  
शोकमुपानयन् Kummer bringen R. 6, 82, 3. heranziehen an: उदकात्तमु-  
पानीय मत्स्यम् an's Ufer MBh. 3, 12756. (ताम्) केशवन्ध उपानीय बाहु-  
भ्यां परिष्वजे Bhāg. P. 8, 12, 28. (शरीरतमम्) अश्वपात्तमुपानीय R. 3, 50,  
17. — 2) *hinführen, wegführen, entföhren*: उपानीय ततो गङ्गा रसात-  
लतलम् R. 1, 44, 42 (45, 32 GORR.). बलात् । स्वयंवराडुपानीते अम्बिका-  
म्बालिके Bhāg. P. 9, 22, 23. यथासतः सन्नुपानयते *hinführen zu* so v.  
a. *einweihen in* MBh. 5, 1339. — Formen mit dem Augment haben wir  
zu उप gestellt.

— समुपा *an einen Ort Viele herbeiführen, versammeln*: श्रोत्रियांश्च  
विदेशस्थानस्तकृत्य समुपानय R. GORR. 1, 11, 7. मन्त्राय समुपानीतैः MBh.  
1, 7460. — Formen mit dem Augment stehen unter समुप.

— न्या *zurückbringen*: इयं कृ मन्त्रं तामोषधिर्बद्धे न्यानयेत् AV.  
7, 38, 5.

— पर्या 1) *herumführen*: पर्याणयति पत्नीमुभौ जघनेनाग्नी CAT. Br. 3,  
5, 2, 13. GOBB. 3, 8, 5. ÇĀNKH. GRHJ. 1, 13. 2, 6. को नु ताम् — पर्याणयेत्स-  
भामध्ये MBh. 2, 2685. — 2) *herbeiführen, herbeibringen*: ऐनं नयन्मा-  
तृरिष्टा देवेभ्यो मयितं परि RV. 3, 9, 5. पाञ्चालराजं दुपदं गृहीत्वा रणामू-  
र्धनि । पर्याणयत MBh. 1, 5446.

— प्रत्या 1) *zurückführen, zurückbringen*: ते नयति परं पारं सिद्धा-  
न्प्रत्यानयति च R. 4, 44, 79. सीतां प्रत्यानयिष्यामि 5, 75, 18. 4, 58, 39.  
नयितुम् 2, 92, 22 (85, 13 SCHL.). प्रत्यानयति शत्रुभ्यो वन्दीमिव जयश्रि-  
यम् KUMĀRAS. 2, 52. अग्रिम् KAUC. 89. प्रत्यानीताः परम भवता त्रायता नः  
स्वभागाः Bhāg. P. 7, 8, 42. तूर्णं प्रत्यानयस्वैतान्कामं व्यधगतानपि MBh.  
2, 2475. पुनः प्रत्यानये पशून् 4, 1177. 12, 1764. कञ्चिन्निभिः क्रमैः पूर्वं कृ-  
तार्होक्तानिमान् — पुनः प्रत्यानयिष्यामः so v. a. *wiedergewinnen* HARIV.